राज्य सभा सचिवालय

जॉहन्सबर्ग, साउथ अफ्रीका में 22 से 24 सितम्बर, 2012 के दौरान आयोजित नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रतिभागिता संबंधी रिपोर्ट

उपर्युक्त सम्मेलन में प्रतिभागिता हेतु सचिवालय के निम्नलिखित पांच अधिकारियों को नामित किया गया था :-

1. श्री गोबिंद लाल - संयुक्त सचिव (रिपोर्टिंग)
2. श्री बीरेन्द्र कुमार - निदेशक (ई.एंड. टी)
3. श्रीमती सुलक्षणा शर्मा - निदेशक (ई.एंड.टी)
4. श्री ज्ञानेन्द्र सिंह - संयुक्त निदेशक (रिपोर्टिंग)
5. श्री अजीत सिंह चालिया - संयुक्त निदेशक (रिपोर्टिंग)

नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए सभी अधिकारियों ने 20 सितम्बर, 2012 को जॉहन्सबर्ग के लिए प्रस्थान किया और 21 सितम्बर, 2012 को जॉहन्सबर्ग पहुंचे। 21 सितम्बर को ही दक्षिण अफ्रीका में भारत के उच्चायुक्त श्री वीरेन्द्र गुप्ता की ओर से प्रिटोरिया में अपने निवास स्थान पर रात्रि भोज का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती परनीत कौर अन्य गणमान्य प्रतिनिधियों के साथ वहां मौजूद थीं। वहां पर अफ्रीकी मूल के कलाकारों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

22 से 24 सितम्बर तक चले इस सम्मेलन का विषय था "भाषा की अस्मिता और हिन्दी का वैश्विक संदर्भ"। विश्व शांति, अहिंसा, समानता और संपूर्ण मानव जाति के न्याय के लिए लंबे समय तक महात्मा गांधी द्वारा और उनके जीवन से प्रभावित दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला द्वारा चलाए गए संघर्ष को ध्यान में रखते हुए 'नेल्सन मंडेला सभागार' में सम्मेलन के उद्घाटन स्थल का नाम 'गांधीग्राम' तथा अन्य सत्रों वाले स्थलों का नाम क्रमश: शांति, सत्य, अहिंसा, नीति और न्याय रखा गया।

सम्मेलन का उद्घाटन 22 सितम्बर, 2012 को प्रात: 10.00 बजे "गांधी ग्राम", नेल्सन मंडेला सभागार, सैंडटन कन्वेंशन सेंटर, जॉहन्सबर्ग में भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती परनीत कौर और दक्षिण अफ्रीका सरकार के वित्त मंत्री श्री प्रवीन गोर्धन ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर मॉरीशस सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी, दक्षिण अफ्रीका के उप विदेश मंत्री श्री मरियस लीवेलिन फ्रेंसमेन, सुश्री इला गांधी, दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा संघ की अध्यक्ष श्रीमती मालती रामबली, दक्षिण अफ्रीका में भारत के उच्चायुक्त महामान्य श्री वीरेन्द्र गुप्ता, सम्मेलन संचालन समिति के सदस्य श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी और विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री एम. गणपति भी मंच पर उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम की शुरुआत जॉहन्सबर्ग में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के कलाकारों तथा दक्षिण अफ्रीका के स्थानीय लोक कलाकारों की रंगारंग एवं संगीतमय प्रस्तुति के साथ हुई। उद्घाटन समारोह की अध्यक्ष, विदेश राज्य मंत्री श्रीमती परनीत कौर ने दक्षिण अफ्रीका में नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन और दक्षिण अफ्रीका के साथ महात्मा गांधी के जुड़ाव के बीच संबंध स्थापित करते हुए कहा कि इस संबंध में दक्षिण अफ्रीका आना भारत के प्रतिभागियों के लिए किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं है। तत्पश्चात्, मंच पर पीठासीन महानुभावों ने हिन्दी के बारे में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए और उच्चायुक्त श्री वीरेन्द्र गुप्ता ने देश-विदेश से आये सभी मेहमानों, हिन्दी विद्वानों, साहित्यकारों और हिन्दी प्रेमियों का स्वागत किया। सम्मेलन में 'स्मारिका' और 'गगनांचल' पत्रिका के विशेषांक प्रकाशित किए गए।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् हिन्दी पुस्तकों, सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों आदि की एक मिश्रित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। यह प्रदर्शनी नेशनल बुक ट्रस्ट, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, सी-डैक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी। इसके बाद, दक्षिण

अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा संघ के संस्थापक पंडित नरदेव वेदालंकार की अर्ध-प्रतिमा का अनावरण किया गया।

दूसरे सत्र में मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत करते हुए कहा कि उन्हें हिन्दी से बहुत प्यार है। उन्होंने बताया कि दो विश्व हिन्दी सम्मेलन उनके देश में हो चुके हैं। उन्होंने यह भी बताया कि विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरीशस में है और मॉरीशस की सरकार ने इसके लिए भवन के निर्माण हेतु दो एकड़ ज़मीन उपलब्ध करा दी है। उन्होंने अपने देश में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण भी दिया। इसके बाद मंच पर विराजमान अन्य विद्‌वानों ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के संबंध में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

मध्याह्न पश्चात् 14.30 बजे से 17.00 बजे तक तीन समानान्तर शैक्षिक सत्र "महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ, शांति कक्ष में, अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा - युवाओं का योगदान, अहिंसा कक्ष में तथा सूचना प्रौद्‌योगिकी: देवनागरी लिपि और हिन्दी का सामर्थ्य, नीति कक्ष में" प्रारम्भ हुए।

शांति कक्ष में "महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ" विषय पर चर्चा हुई। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि एवं बीज वक्ता न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी थे। सत्र की अध्यक्षता श्री विभूतिनारायण राय ने की। सत्र संचालक डा. हरजेन्द्र चौधरी थे। इसमें श्री मधुकर उपाध्याय, प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल, डा. विजय बहादुर सिंह, प्रो. नन्द किशोर आचार्य तथा प्रो. राम भजन सीताराम (दक्षिण अफ्रीका) ने अपने-अपने विचार रखे।

'अफ्रीका में हिन्दी शिक्षण-युवाओं का योगदान' विषय पर चर्चा अहिंसा कक्ष में हुई। इसमें विशिष्ट अतिथि श्री रघुनंदन शर्मा, संसद सदस्य थे। सत्र की अध्यक्षता डा. विमलेश कांति वर्मा ने की। बीज वक्तव्य सुश्री मालती रामबली (दक्षिण अफ्रीका) ने दिया। सत्र संचालक डा. ऊषा शुक्ला (दक्षिण अफ्रीका) थीं। चर्चा में

श्रीमती सरिता बुधू (मारीशस), श्री सत्यदेव टेंगर, श्री नारायण कुमार तथा डा. वीणा लच्छमन (दक्षिण अफ्रीका) ने भाग लिया।

"सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिन्दी का सामर्थ्य" विषय पर नीति कक्ष में परिचर्चा हुई। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. अलका बलराम क्षत्रिय, संसद सदस्य थीं। इस सत्र की अध्यक्षता डा0 अशोक चक्रधर ने की । इसमें श्री जगदीप सिंह डांगी (वैज्ञानिक), श्री महेश कुलकर्णी (सी-डैक), श्री आर. सुरेन्द्रन, श्री परमानन्द पांचाल और सत्र संचालक श्री बालेन्दु दाधीच ने अपने-अपने विचार रखे। बीज वक्तव्य श्री ओम विकास ने दिया। श्री परमानन्द पांचाल ने बताया कि भारत सरकार ने हिन्दी की-बोर्ड का मानकीकरण कर दिया है और इसके संबंध में फरवरी, 2012 में आदेश भी जारी कर दिए हैं। डा0 अशोक चक्रधर ने कहा कि कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए आसान की-बोर्ड का प्रयोग किया जाए, जिसका उपयोग आम आदमी कर सके। इस सत्र की परिचर्चा में प्रो0 अलका बलराम क्षत्रिय (संसद सदस्य) और डॉ0 रघुवंश प्रसाद सिंह (संसद सदस्य) ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने उपस्थित विद्वानों को विश्वास दिलाया कि वे हिन्दी के विकास को बढ़ावा देने के लिए संसद में और संसद के बाहर पूरा सहयोग करेंगे।

सायंकाल 7.00 बजे एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें 'संत कबीर' की जीवनी पर आधारित नाटक का मंचन किया गया। इस नाटक की विशेषता यह थी कि इसमें एक ही पात्र ने विभिन्न चरित्रों को प्रस्तुत किया था। यह अपने आप में एक अनोखी प्रस्तुति थी।

23 सितम्बर, 2012 को प्रात: 10.00 बजे से 12.30 बजे तक तीन समानान्तर शैक्षिक सत्र हुए। "हिन्दी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका" विषय पर शांति कक्ष में परिचर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता डा. गोपेश्वर सिंह ने की और इसमें विशिष्ट अतिथि श्री किशन भाई पटेल, संसद सदस्य

थे। इस परिचर्चा में भाग लेने वालों में श्री राकेश पाण्डेय, श्री दिनेश कुमार शुक्ल, डॉ0 ऊषा देसाई (दक्षिण अफ्रीका), डा. सोमा बंदोपाध्याय, डा. केदार मंडल तथा श्री शंभु गुप्त थे। इन सभी विद्वानों के साथ-साथ अन्य हिन्दी विद्वानों ने भी अपने-अपने विचार और लेख प्रस्तुत किए। सत्र संचालन डा. कमल किशोर गोयनका ने किया तथा बीज वक्तव्य श्री भारत भारद्वाज ने दिया।

"लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिन्दी" विषय पर अहिंसा कक्ष में परिचर्चा हुई। इस सत्र का संचालन श्री संजीव ने किया तथा अध्यक्षता वरिष्ठ हिन्दी पत्रकार श्री शशि शेखर ने की। इसमें बीज वक्तव्य डॉ0 रवीन्द्र कालिया ने प्रस्तुत किया। इनके अलावा, प्रो0 शम्भुनाथ, श्री अखिलेश, श्री कमलेश जैन, श्री कुरबान अली, श्री फकीर हसन (दक्षिण अफ्रीका) आदि ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मणि शंकर अय्यर, संसद सदस्य ने भाग लिया। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी भाषा का विस्तार करने के लिए सभी को हिन्दी के अलावा दूसरी भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी अपनाना चाहिए। इस सत्र की परिचर्चा बड़ी ही रोचक रही।

"ज्ञान-विज्ञान और रोज़गार की भाषा के रूप में हिन्दी" विषय पर नीति कक्ष में परिचर्चा हुई। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जाबिर हुसैन ने की और इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री निनोंग इरींग, संसद सदस्य ने भाग लिया। बीज वक्तव्य श्रीमती चित्रा मुद्गल ने दिया। इस परिचर्चा में श्रीमती ममता कालिया, प्रो0 आर.एस. सराजू, श्री रवि चतुर्वेदी, श्री उपेन्द्र कुमार, श्रीमती शिवा श्रीवास्तव (दक्षिण अफ्रीका) मोहम्मद कुंजू मथारु ने भाग लिया। संचालक श्री मुहम्मद मथारु थे।

भोजनावकाश के बाद 14.30 बजे से 17.00 बजे तक "विदेश में भारत- भारतीय ग्रंथों की भूमिका" विषय पर परिचर्चा शांति कक्ष में हुई। सत्र का संचालन डा. रामेश्वर राय ने किया। सत्र की

अध्यक्षता डा. रत्नाकर पाण्डेय ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सांसद डा. प्रसन्न कुमार पाटसाणी उपस्थित थे। परिचर्चा में श्री अनन्त राम त्रिपाठी, श्रीमती शांताबाई, प्रो. मैनेजर पाण्डेय, श्री दूधनाथ सिंह तथा डा. ऊषा शुक्ला (दक्षिण अफ्रीका) ने भाग लिया। बीज वक्तव्य श्री नरेन्द्र कोहली ने दिया।

"हिन्दी - फिल्म, रंगमंच और मंच की भाषा" विषय पर परिचर्चा शांति कक्ष में हुई। इस सत्र के अध्यक्ष डा0 प्रभाकर श्रोत्रिय थे तथा विशिष्ट अतिथि सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी थे। सत्र का संचालन डा. बदरी नारायण ने किया तथा बीज वक्तव्य श्री प्रयाग शुक्ल ने दिया। इस परिचर्चा में श्री गिरधर राठी, प्रो0 असगर वजाहत, श्री हृषिकेश सुलभ तथा श्रीमती भवानी प्रीतिपाल (दक्षिण अफ्रीका) ने भाग लिया।

"हिन्दी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका" विषय पर परिचर्चा नीति कक्ष में हुई। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने की तथा संचालन डा. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में डा. कैलाश चन्द्र पंत उपस्थित थे। परिचर्या में श्रीमती मृदुला सिन्हा, श्रीमती रीता रानी पालीवाल, डा. ओम प्रकाश बाल्मीकि तथा डा. ध्रुव पाण्डेय (दक्षिण अफ्रीका) ने भाग लिया। बीज वक्तव्य डा. इन्द्रनाथ चौधरी ने दिया। सम्मेलन में पहुंचे भारतीय विद्वानों का मानना था कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुवाद अत्यंत आवश्यक है। अनुवाद कार्य में बहुत-सी समस्याएं हैं और इन समस्याओं पर ग़ौर किया जाना भी आवश्यक है। सम्मेलन में इस बात पर भी आम राय बनी कि हिन्दी भाषा की सूचना एवं प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिन्दी भाषा संबंधी उपकरण विकसित किए जाएं।

आलेखों का प्रस्तुतिकरण न्याय कक्ष और ज्ञान कक्ष में हुआ।

सायं काल 7.00 बजे से 8.30 तक भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् तथा दक्षिण अफ्रीका के स्थानीय कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक

कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां की गईं, जिनकी सराहना सभी उपस्थित प्रतिभागियों ने की।

24 सितम्बर, 2012 को 09.45 बजे गांधीग्राम, नेल्सन मंडेला सभागार में विभिन्न प्रसिद्ध हिन्दी विद्वानों द्वारा लिखी गई पुस्तकों का लोकार्पण भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती परनीत कौर के कर-कमलों द्वारा किया गया। माननीय मंत्री महोदया ने नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में देश-विदेश से आये हिन्दी साहित्यकारों को उनके हिन्दी में किए गए योगदान के लिए सम्मानित किया।

तत्पश्चात्, 11.00 बजे से 12.30 बजे तक नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का समापन समारोह नेल्सन मंडेला सभागार में किया गया। समापन की अध्यक्षता महामहिम श्री वीरेन्द्र गुप्ता जी ने की । मंच पर उपस्थित सभी सत्रों के अध्यक्षों ने अपने-अपने विषयों पर परिचर्चा में निकले निष्कर्षों का आदान-प्रदान किया और संक्षिप्त में उनसे सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया। भोजनावकाश के बाद कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में भाग लेने के पश्चात् चार अधिकारी 27 सितम्बर, 2012 को और श्री बीरेन्द्र कुमार 29 सितम्बर, 2012 को वापिस दिल्ली पहुंच गए।

तीन दिन तक चले इस मस्तिष्क-मंथन के पश्चात् निम्नलिखित संकल्प पारित किए गए :-

1. मॉरीशस में स्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय विभिन्न देशों के हिन्दी शिक्षण से संबद्ध विश्विविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों से संबंधित एक डाटाबेस का बृहत् स्रोत केन्द्र स्थापित करे।
2. विश्व हिन्दी सचिवालय विश्व भर के हिन्दी विद्वानों, लेखकों तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का एक डाटाबेस तैयार करे।

3. हिन्दी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिन्दी भाषा संबंधी उपकरण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाए।

4. विदेशों में हिन्दी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किए जाने के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा को अधिकृत किया जाए।

5. अफ्रीका में हिन्दी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुए वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रुचि एवं आकांक्षाओं को देखते हुए उपयुक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जाएं।

6. सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएं ताकि इनका लाभ विश्व भर के हिन्दी भाषियों और हिन्दी प्रेमियों को मिल सके।

7. अनुवाद की महत्ता को देखते हुए अनुवाद के विभिन्न आयामों के संदर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है। अत: इस दिशा में ठोस कार्यवाही की जाए।

8. विश्व हिन्दी सम्मेलनों के बीच के अंतराल में विभिन्न देशों में विशिष्ट विषयों पर क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजिए किए जाते हैं। सम्मेलन ने इसकी सराहना करते हुए इसे प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

9. विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भारतीय और विदेशी विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा रही है। इसे गरिमापूर्ण नाम देते हुए "विश्व हिन्दी सम्मान" कहा जाए।

10. हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने के लिए समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

11. दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजन के बीच यथासंभव अधिकतम तीन वर्ष का अंतराल रहे।

12. 10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाए।

तत्पश्चात्, विदेश राज्य मंत्री श्रीमती परनीत कौर के समापन भाषण और श्री वीरेन्द्र गुप्ता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ "नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन" सम्पन्न हुआ।

यहां यह कहना अनुचित न होगा कि हिन्दी राजभाषा, संपर्क भाषा और जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की यह भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी संतोषजनक है कि आने वाले समय में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय महत्व की जो चंद भाषाएं होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी।

गोबिंद लाल
बीरेन्द्र कुमार
सुलक्षणा शर्मा
ज्ञानेन्द्र सिंह
अजीत सिंह चालिया